रेगिस्तान

बाड़मेर में दूर-दूर तक फैले रेत के टीलों और उसमें यदा-कदा बिखरी बस्तियों या ढाणियों में एक सवाल सबके सामने उभर कर खड़ा हो चुका है- चारे और पानी का संकट जब फरवरी में ही उपस्थित हो चुका है तो आने वाले गर्मी के महीनों में क्या हाल होगा?

राजस्थान में थार रेगिस्तान के जो क्षेत्र है उनमें सबसे विकट स्थिति है बाड़मेर की। यहां इंदिरा गाँधी नहर परियोजना का थोड़ा सा जल भी नहीं पहुंचा है। एक तो वर्षा वैसे ही देश के औसत से बहुत कम होती है पिछले वर्ष तो यहां वर्षा जैसे झांकने भर को आई। मात्र 52 मिमी. की वर्षा दर्ज की गई। एक फसली इस इलाके की खरीफ की फसल पहले से तबाह हो रहे किसानों को और कर्जग्रस्त करती हुई लगभग पूरी तरह नष्ट हो गई। सभी 1975 गांव पूरी तरह सूखे से प्रभावित घोषित हो चुके हैं।

भारत पाक सीमा के पास स्थित भीलों के तला गाँव की ओर जाते हुए यह लेखक एक छोटे कुएं के पास रूका। यहां एक छोटे से पर बहुत गहरें कुएं से तीन व्यक्ति आपसी सहयोग से लगभग 200 फीट लंबी रस्सी की मदद लेकर पानी निकाल रहे थे। पानी इतना गहरा था कि नजर नही आता था। उसमें चमड़ें का थैला डालकर उसे खींचते हुए दो व्यक्ति रस्सी का दूसरा कोना पकड़कर बहुत दूर तक चलते जाते थे। जब थैला ऊपर आता था तो तीसरा सदस्य (जो एक स्कूल का एक बच्चा था पर पानी लाने की जिम्मेदारी के कारण वह स्कूल छोड़ आया था) उसे कुएं के पास बनाए गए गड्डे में डाल देता था। इस तहर लगभग दस मटके पानी उस गड्डे में डाला गया व फिर दुबारा उस गड्डे से निकालकर उसे कैनवास या मोटे कपड़े के उन थैलों में भरा गया जो एक ऊंट पर लदे थे। अब जहां लगभग दो-तीन किमी. से दूर वे पानी भरने आए थे उन्हें ऊंट सहित वापिस जाना था। इस तरह तीन व्यक्तियों व एक ऊंट ने लगभग पाँच घंटे लगाकर दस मटके पानी का इंतजाम किया। वह भी इतना खारा पानी कि मुझसे तो पिया ही नहीं गया। मेरे साथी सामाजिक कार्यकर्ता सीताराम जीने बताया- यह तो अभी आप अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति देख रहे है। गर्मियों में पानी बहुत कम बचता है अत: पर्याप्त पानी उपलब्ध हो इसके लिए इंतजार करने में कई घंटे कभी-कभी तो रात भर बैठना पड़ता है।

कुछ समय बाद मैं धनऊ कस्बे की ओर जा रहा था तो सड़क किनारे पर ही मिला हड्डियों का एक विशाल ढेर-उन मृत पशुओं की हड्डिया जो इस सूखे के संकट में चारे व पानी के अभाव में मर गए। जब मैं इनका चित्र लेने आगे बढा तो गिध हड्डियों के आसपास तेजी से उड़ान भरने लगे।

ये प्रतीक है पेयजल और चारे के उग्र होते संकट के। मई का महीना आते-आते सरकार को अधिकांश गाँवों को पेयजल टेंकरों द्वारा उपलब्ध करवाना होगा यह जल कहां से प्राप्त

का अकाल: संकट में है बाड़मेर

राजस्थान टाइम्स 16-3-03

□ भारत डोगरा

राजस्थान में थार रेगिस्तान के जो क्षेत्र है उनमें सबसे विकट स्थिति है बाड़मेर की। यहां इंदिरा गाँधी नहर परियोजना का थोड़ा सा जल भी नहीं पहुंचा है। एक तो वर्षा वैसे ही देश के औसत से बहुत कम होती है पिछले वर्ष तो यहां वर्षा जैसे झांकते भर को आई। मात्र 52 मिमी. की वर्षा दर्ज की गई। एक फसली इस इलाके की खरीफ की

करना है इसका पूर्व नियोजन करना और उचित संख्या में टैंकरों की व्यवस्था करना इस समय की प्राथमिकता होनी चाहिए। साथ ही पाईप लाईनों के अवैध कनैक्शन हटाने चाहिए ताकि जरूरतमंद बस्तियों तक पानी पहुंच सके। मुख्य बस्ती तक प्राय: टेंकर पानी पहुंचा देते है पर प्राय: इनके आगे की ढाणियां वंचित रह जाती है। ढाणियों तक पानी पहुंचाने में ऊंट सबसे उपयोगी है। ऊंट के माध्यम से पानी पहुंचाने मे कई स्थानीय व्यक्तियों को रोजगार भी दिया जा सकता हैं।

सरकार व स्वैच्छिक संस्थाओं के सहयोग से लगभग 260 गौवंश के पशुओं के शिविरों का आयोजन किया गया है। जहां लगभग एक लाख पशुओं को नि:शुल्क चारा पानी मिलता है। इस समय सरकार प्रति गाय 12 रूपए की सहायता देती है। इसे यह सहायता रूपयों में न निर्धारित कर चारे की मात्रा में निर्धारित करनी चाहिए ताकि कीमते बढ़ने पर भी न्यूनतम चारे से पशु वंचित न हो। चारे की गुणवत्ता सुधारने की भी जरूरत है। कुछ व्यापारी बहुत ही घटिया, मिट्टी-रेत भरा चारा भेज रहे है। उनके विरूद्ध सख्त कार्यवाही होनी चाहिए। गौवंश के अतिरिक्त भेड़, बकरी, ऊंट आदि अन्य महत्वपूर्ण पशुओं के लिए भी चारे पानी की चिन्ता करनी चाहिए।

ऊंट तो वैसे कहने को तो रेगिस्तान का जहाज कह दिया गया है पर उसकी रक्षा और संरक्षण की ओर बहुत कम ध्यान दिया गया है। यही कारण है कि रेगिस्तान के लिए इतना उपयोगी पशु आज अपने घर में ही संकटग्रस्त हो चला है। खेतों की जुताई के लिए ट्रैक्टर क्या आ गया कि ऊंट की उपयोगिता पर प्रश्न चिन्ह लगने लगे। पर पानी लाने जैसे कितनी ही तरह की ऊंट की उपयोगिता नजरअंदाज नहीं की जा सकती है। फिर अनुभवी लोग यह भी बताते हैं कि जब से खेतों में ट्रैक्टर से जुताई हुई है, तब से स्वत: उपलब्ध होने वाले खाद्य, औषधि व चारे की दृष्टि से उपयोगी अनके पेड़-पौधे व झाड़ खेतों से लुप्त होने लगे हैं। अत: हो सकता है कि एक दिन ट्रैक्टर अपनाने वाले किसान भी फिर से ऊंट को याद करें।

अकाल राहत कार्य को प्रशासन ने काफी व्यापक स्तर पर चलाया हुआ है जिससे उम्मीद यह रहती है कि एक माह में कम से कम नौ दिन के लिए एक परिवार को रोजगार अवश्य मिल जाए। असहाय व्यक्तियों/परिवारों के लिए 50 किग्रा. गेंहू की अलग व्यवस्था है। हालांकि कुछ जरूरतमंद लोग राहत कार्य या असहाय सहायता से अभी तक छूट रहे हैं, पर कुल मिलाकर प्रशासन के राहत प्रयास ने अनेक गांवों में उम्मीद जगाई रखी है व कई लोगों के संभावित पलायन को रोका है। दूसरी और यदि केन्द्रीय सरकार ने राहत कार्य में खाद्यान्न की आपूर्ति कम कर दी तो इससे रोजगार में कमी आएगी व भूख की समस्या बढ़ेगी।

सीमा क्षेत्र होने के नाते यहां के अनेक गांवों के लिए सीमा क्षेत्रों के विशेष कार्यक्रम का बजट भी उपलब्ध है। पर महिला मंडल से जुड़े सामाजिक कार्यकर्त्ता आदिल भाई के अनुसार यह बजट शहरी भवन व क्रिकेट स्टेडियम बनाने जैसे कार्यो पर खर्च हो जाता है व गरीब लोगों तक नहीं पहुंच पाता है।

सामाजिक श्योरं व सामाजिक कार्य अनुसंधान केन्द्र जैसी संस्थाओं के दस्तकारी के कार्यो में अकाल के दिनों में कई ग्रामीण महिलाओं को रोजगार मिला है। श्योर ने स्थानीय अच्छी नस्ल की थारपरकर गांवों के संरक्षण का कार्य भी किया है। बाड़मेर के नेहरू युवक केन्द्र ने अनेक गांवों में पवित्र वनों ओरण की रक्षा करने व उन्हें नये जीवन देने के कार्य को प्रोत्साहित किया है। लोक अधिकार नेटवर्क से ऐसे अनेक सार्थक कार्यो में समन्वय बता कर अकाल से जूझने की एक व्यापक रणनीति निकालने का प्रयास कर रहा है। प्रशासन और सामाजिक कार्यकर्ताओं के परस्पर सहयोग से ही ऐसा एक समन्वित प्रयास आगे बढ़ सकता है, जिसमें तत्कालीन जरूरी राहत देने के साथ साथ आत्म निर्भर व हरे-भरे भविष्य की संभावनाएं भी नजर आती है।